शेंग ज़िआओ नामक चीनी राशि चक्र, बारह वर्षीय चक्र पर आधारित है, जिसमें हर एक वर्ष एक अलग पशु-चिह्न से जुड़ा है। २०१७ में चीनी नववर्ष २८ जनवरी को है और यह कुक्कुट-वर्ष [मुर्गे के वर्ष] के आरम्भ का सूचक है।

मुर्गा, आत्मविश्वास और बुद्धिमानी का प्रतीक है। मुर्गे की राशि वाले व्यक्ति ज़िम्मेदार, अनुशासित और चतुर माने जाते हैं। वे ढोंग तथा भ्रम की सही पहचान करने में सक्षम होते हैं।

मुर्गा और लोमड़ी

पंचतन्त्र से एक कहानी

भारत के एक सघन, हरे-भरे सारण्डा नामक वन में एक वृक्ष की फुनगी पर एक शानदार मुर्गा हर्ष से बाँग दे रहा था। जैसे ही स्वर्णिम सूर्य की पहली किरणों ने पर्वतों को जगमगाया, मुर्गे के रंगबिरंगे पंख चमकने लगे। इस भव्य दृश्य को देखकर उसने अपनी छाती फुलाई। "कितनी ख़ूबसूरत सुबह है," उसने मन में सोचा। वह अपने परिवार और मित्रों के लिए खाना जुटाने की योजना बनाने लगा जिससे वे नए दिन का उत्सव मनाने के लिए दावत कर सकें।

तभी नीचे, वन की उस नम व छायादार ज़मीन पर एक लोमड़ी उस विशाल वृक्ष के नीचे आकर रुकी और उसने यूँही ऊपर देखा। जब उसकी नज़र इस मोटे-ताज़े, सुन्दर मुर्गे पर पड़ी, वह अपनी ख़ुशी को रोक न सकी। उसके मुँह में पानी आ गया और वह अपने होठों पर जीभ फिराते हुए सोचने लगी : "यह तो बड़ा लज़्ज़तदार नाश्ता है।" वह तुरन्त ही मुर्गे को वृक्ष से नीचे लाने के उपाय सोचने लगी।

"महाशय, आपकी आवाज़ कितनी मीठी है," लोमड़ी बोली।

"कुकडूं कूऽ ऽ!" मुर्गे ने जोर-से बाँग दी। "धन्यवाद, लोमड़ी।"

"क्या आपने वह ख़ुशख़बर सुनी है?" लोमड़ी बड़े मीठे स्वर में बोली।

"ख़ुशख़बर? कैसी ख़ुशख़बर?" मुर्गे ने उत्सुकता से पूछा।

लोमड़ी ने आश्चर्य से कहा, “आपने सुना नहीं? अरे, सभी जानवरों के बीच शान्ति के बारे में एक उद्घोषणा की गई है। यह मध्यरात्रि से लागू हो गई है। अब से कोई भी जानवर न तो किसी दूसरे जानवर को मारेगा और न ही उसे खाएगा। अब हम सब एक परिवार की तरह एक-साथ रहेंगे। आप मेरे भाई जैसे होंगे।”

“सचमुच? क्या कह रही हो!” मुर्गे ने विस्मय भरे भाव के साथ अपनी गर्दन घुमाते हुए कहा। “यह कैसे होगा? क्या सिंह और बाघ खुशी-खुशी घासफूस खा लेंगे?”

“हाँ बिलकुल,” लोमड़ी बोली। “अगर आपको मुझ पर भरोसा नहीं है तो चलिए, हम साथ चलकर उनसे पूछ लेते हैं। क्या आप अपने इस विशाल वृक्ष से नीचे नहीं आएँगे?”

पल भर रुककर मुर्गा इसके बारे में सोचने लगा। अब किसी भी जानवर को डरने की ज़रूरत नहीं कि कोई जानवर उसे खा लेगा, यह विचार उसे बड़ा ही सुखद लग रहा था। फिर भी उसने अपनी डाली से नीचे उतरने का कोई प्रयास नहीं किया।

उधर, नीचे ज़मीन पर लोमड़ी बेचैन हुई जा रही थी। तथापि, अपनी आवाज़ को मधुरतम, सर्वाधिक मोहक बनाते हुए वह कहने लगी, “श्रीमान् मुर्गे जी, कृपया नीचे आइए और चलिए हम उनसे पूछें। आप किस बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं?”

मुर्गे ने नीचे लोमड़ी की ओर देखा। वह वृक्ष की जड़ के पास ही इधर से उधर, उधर से इधर चक्कर लगा रही थी। उसकी आँखें फैली हुईं और अधीर लग रही थीं। “ओह,” मुर्गे ने अपने सुन्दर पंख हिलाते हुए धीरे-से कहा। और फिर वह मन ही मन बुदबुदाया “अरे हाँ। हाँ-हाँ, ऐसा ही है! मैं सब समझ गया।”

लोमड़ी ने फिर से कहा, “श्रीमान् मुर्गे जी, आप कब तक इस बारे में सोचते रहेंगे? दूसरे जानवरों से बात करने के लिए कृपया मेरे साथ चलिए। यह बढ़िया ख़बर खुद अपने ही कानों से सुनकर आपको बहुत खुशी होगी।”

मुर्गे ने अपने पंजों को जमाया और आगे झुककर, लोमड़ी की तरफ़ देखा। अचानक ही उसने चिन्तित-से स्वर में पूछा, “क्या तुम उन पदचापों को सुन रही हो? ऐसा लग रहा है कि जानवरों का झुण्ड हमारी ही ओर आ रहा है।” मुर्गे ने अपनी गर्दन को आगे निकाला, मानो वह और अच्छी तरह देखने की कोशिश कर रहा हो। उसकी आवाज़ में घबराहट आ गई। “मैं यहाँ से उन्हें देख सकता हूँ!”

“कौन-से जानवर?” लोमड़ी ने तुरन्त सतर्क होते हुए जानना चाहा।

“लगता है — ऐसा लगता है यह भेड़ियों का झुण्ड है!” मुर्गे ने चिल्लाकर कहा। “परन्तु तुम चिन्ता न करो, लोमड़ी बहन। क्योंकि तुमने तो वह शान्ति की उद्घोषणा सुन ही ली है, वे तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँचाएँगे, है न?”

इससे पहले कि मुर्गा अपना यह प्रश्न पूरा करता, लोमड़ी अपना पूरा दम लगाकर वहाँ से भाग निकली, उसकी आँखों में डर दिखाई दे रहा था। वह तुरन्त ही वहाँ से ग़ायब हो गई।

अपने वृक्ष की फुनगी पर सुरक्षित बैठकर, उदित हुए सूर्य की गरमाहट को अपनी पीठ पर महसूस करते हुए मुर्गा गाने लगा : “कुकडूं कूऽ ऽ!”

यह कहानी तरह-तरह से, पूरे विश्वभर में हज़ारों सालों से सुनाई जाती रही है। यह कहानी ईसप की कथाओं में तथा पंचतन्त्र में भी है; पंचतन्त्र, तीसरी शताब्दी ई.पू. के काल की संस्कृत कहानियों का एक संग्रह है। उस समय भारत के एक राज्य में, तीन राजकुमार थे जिनकी शासन-कौशल सीखने की गति बहुत मन्द थी। उनके पिता, महाराज ने पण्डित विष्णु शर्मा को उनका शिक्षक नियुक्त किया और उन्हें इस स्थिति का कोई उपाय निकालने के लिए कहा। उन आदरणीय विद्वान ने राजकुमारों को जानवरों की ये कहानियाँ सुनाकर सीखने में उनकी सहायता की, जिससे वे उचित व अनुचित तरीक़ों से कार्य करने के बारे में निर्णय कर सकें।

मार्गरिट सिम्पसन और ईशा सरदेसाई द्वारा पुनर्कथित
मोर्ट गर्बर्ग द्वारा चित्रित
डिज़ाइन : हीरा तनर

© २०१७ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।